बाइबल के बाहरी स्त्रोतों से उसके मनुष्य होने का प्रमाण

हम यीशु की ईश्वरीयता पर व्यापक बात कर चुके हैं। ईश्वरीयता की बात करते हुए हम परमेश्वर की बात करते हैं जो सर्वोच्च जीव है। परमेश्वर को व्यक्ति में देखने के लिए हम परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, या परमेश्वर आत्मा की बात करते हैं। यीशु को हम देख चुके हैं कि वह परमेश्वर पुत्र है। यीशु देहधारी हुआ परमेश्वर अर्थात देह में परमेश्वर है। पीड़ाभासवादी (एक फिलासफी) लोगों ने यीशु के *मनुष्य होने* को नकार दिया था क्योंकि उनका मानना था कि परमेश्वर (विशुद्ध आत्मा) अपने आप को अशुद्ध तत्व (शरीर) के साथ इतनी गहराई से जोड़कर नहीं दिखा सकता था। यह तो विधर्म था; अभी भी है। इतनी हलचल क्यों? क्या परमेश्वर उद्धारकर्त्ता नहीं है? यह समझना इतना आवश्यक क्यों है कि यीशु मनुष्य था।

यीशु का मनुष्य होना हमें इस चौंकाने वाले अहसास तक लाता है कि परमेश्वर *मनुष्य जाति को बचाने के लिए* देह में आया था। प्राचीनकाल से ही सिखाया जाता रहा है कि प्राण लहू में होता है। पापों के बलिदान के लिए लहू बहाया जाना आवश्यक था, परन्तु पशुओं के लहू से पाप नहीं मिट सकते थे (लैव्यव्यवस्था 17:11; इब्रानियों 10:4)। इसलिए, हमें पापपूर्ण स्थिति से बचाने के लिए, जिससे हम अपने आपको शायद बचा नहीं सकते थे, परमेश्वर पुत्र ने पाप रहित सिद्ध लहू का बलिदान भेंट कर दिया था जिसकी प्रभावकारी शक्ति का कोई अन्त नहीं है (इब्रानियों 9:11–14)। इस बात पर चिह्न लगा लें! क्रूस पर बहा लहू किसी प्रकार ''का-दैवीय'' लहू *नहीं* था। क्रूस पर यीशु की मृत्यु परमेश्वर की मृत्यु नहीं थी। यह एक मानवीय जीव अर्थात *मनुष्य की मृत्यु* थी। यह एक *आवश्यक* बलिदान था। (यदि इससे कम बलिदान पर्याप्त होता, तो क्या पिता अपने पुत्र को *इसके लिए* देता?) इसलिए, यीशु के मनुष्य होने की बात से इनकार करने का अर्थ, वास्तव में अपने उद्धार से इन्कार करना होगा। यीशु की ईश्वरीयता और उसके मनुष्य होने के महत्व पर ज़ोर देने के बाद, अब हम उन लेखों की ओर चलते हैं जो उसके ऐतिहासिक होने और मनुष्य होने की पुष्टि करते हैं।

हमारी सबसे अधिक दिलचस्पी उस सब में है जो बाइबल परमेश्वर पुत्र के विषय में कहती है। परन्तु, प्रचार करने तथा सिखाने के दशकों के अपने समय में मुझे कई बार पूछा गया है कि यीशु के अस्तित्व का बाइबल से बाहर कोई प्रमाण है। कैलेण्डर वर्ष इस बात का एक उदाहरण है कि हम सभी संसार में यीशु के होने से प्रभावित हैं!

प्रश्न पूछने वाले साहित्यिक प्रमाण मांगते हैं। उनके लाभ के लिए जो मसीह के जीवन से सम्बन्धित ''बाइबल के बाहरी'' प्रमाणों के विषय में हैरान हो सकते हैं, आइए उन कुछ स्रोतों का संक्षिप्त उल्लेख करते हैं जो समय की लूट-पाट से बच गए हैं। कृपया ध्यान दें कि हम इन दस्तावेज़ों की व्याख्या या उनका मूल्यांकन नहीं कर रहे हैं। हम तो केवल उन्हें प्रमाण के रूप में दे रहे हैं कि बाइबल से बाहर भी यीशु का उल्लेख हुआ है।

क्योंकि यीशु एक यहूदी था जो विशेष रूप से यहूदियों में रहता और काम करता था, इसलिए यह ध्यान देना दिलचस्प बात है कि कोई यहूदी स्रोत इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि यीशु कभी हुआ है। इसके विपरीत बाइबल के अतिरिक्त यहूदी स्रोत संकेत देते हैं कि वह हुआ है। उदाहरण के लिए पहली शताब्दी के एक यहूदी इतिहासकार, जोसेफस ने अपनी *एन्टिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* में लिखा:

> अब इसी समय के आस-पास यीशु, एक बुद्धिमान मनुष्य उठा, यदि उसे एक मनुष्य कहना उचित है तो। क्योंकि वह अद्‌भुत काम (आश्चर्यकर्म) करने वाला, ऐसे लोगों का शिक्षक था जो सच्चाई को आनन्द से ग्रहण करते हैं। उसने बहुत से यहूदियों तथा बहुत से अन्यजातियों को अपनी ओर खींचा। वह मनुष्य ख्रिस्त था।[1]

रोमी लेखकों की ओर से दिया गया प्रमाण दिखाता है कि यीशु एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति था। टेसिटुस एक रोमी इतिहासकार था जो पहली शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर लगभग 120 ईस्वी तक हुआ है। उस आग के बारे में लिखते हुए जिससे 64 ईस्वी में रोम का अधिकतर भाग जल गया था उसने इस दुखांत का आरोप उस समय रोम में रहने वाले मसीहियों पर लगाने के नीरो के प्रयास के बारे में लिखा:

> परिणामस्वरूप, उस रिपोर्ट से पीछा छुड़ाने के लिए [जिसमें उस पर रोम को जलाने का आरोप था], नीरो ने एक विशेष वर्ग को जिनसे उनकी घृणाओं के कारण घृणा की जाती और उन्हें मसीही कहा जाता था, दोषी ठहराकर कठोर यातनाएं दीं। ख्रिस्तुस जिससे उन्हें यह नाम मिला था, ने तिबरयुस के शासनकाल में, हमारे एक हाकिम पोन्तुस पीलातुस के हाथों बहुत ही कठोर दण्ड पाया था ... ।[2]

यद्यपि यहूदी और रोमी स्रोतों से और भी प्रमाण उद्धृत किए जा सकते थे, परन्तु जितने प्रमाण दिए गए हैं हमारे उद्देश्य को पूरा करने के लिए वे काफी हैं। यीशु एक मनुष्य था जो

एक विशेष स्थान तथा इतिहास के एक विशेष समय में रहता था। इसकी पुष्टि बाइबल और बाइबल के बाहर के साहित्यिक स्रोतों से होती है जो सामान्यत: प्रारम्भिक मसीही लहर के प्रतिद्वंद्वियों द्वारा लिखे गए थे। यद्यपि कुछ स्रोतों पर आलोचकों के आक्रमण हुए हैं, परन्तु यह तथ्य तो बना ही रहता है कि बाइबल के अतिरिक्त स्रोतों में ऐतिहासिक यीशु की बात की गई है। यदि यीशु कभी हुआ ही नहीं, तो जोसेफस और टेसिटुस जैसे लेखकों को पीलातुस और तिब्रयुस जैसे अन्य ऐतिहासिक लोगों के सम्बन्ध में लिखने की क्या आवश्यकता थी?

प्राचीन धर्मसार यीशु का वर्णन ''अति परमेश्वर और अति मनुष्य'' के रूप में करते हैं। यह मसीही विश्वास का आधार और सार है। यह मेहराबदार सच्चाई जिस पर मसीहियत टिकी हुई है सुसमाचार के प्रारम्भिक संदेश से ली गई थी, जिसमें अधिकतर पुराने नियम की सामग्री और पवित्र शास्त्र के अध्ययन का जो पहली शताब्दी के अन्तिम भाग तक रहा, सदुपयोग हुआ।

पाद टिप्पणियां

[1]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़ xviii.*3.3.; ऐवरेट एफ़. हेरिसन, *ए शॉर्ट लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1968), 17 में उद्धृत। [2]टेसिटुस *ऐनल्स* XV.44; मोज़स हेडास, सं. *द कम्पलीट वर्क ऑफ़ टेसिटुस,* मॉडर्न लाइब्रेरी, अनु. ए. जे. चर्च एण्ड डब्ल्यू जे. ब्रोडरिब्ब (न्यू यॉर्क: रैंडम हाउस, 1942), 380-81 में उद्धृत। सी. माइलो कोनिक, *जीज़स: द मैन, द मिशन, एण्ड द मैसेज,* दूसरा संस्क. (एंगलवुड क्लिफ्स, एन. जे.: प्रेन्टिस-हाल, 1974), 59 भी देखिए।